F-5
D.El.Ed-1st year

इकाई-III

Date:- 13.05.2020

Topic:- भाषा सीखना : जीन पियाजे

Ans:→ डॉ जीन पियाजे (1896-1980) स्विस मनोवैज्ञानिक थे। वे मूल रूप से प्राणी शास्त्र थे, लेकिन उन्होंने मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। पियाजे का तर्क है कि बुद्धि जन्मजात नहीं होती। बालक जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे आयु के साथ उसका कार्य बढ़ता है। इसी से बुद्धि भी बढ़ती जाती है। उनका मानना है कि मानसिक विकास में जन्मजात कारकों की भूमिका नहीं होती। विकास का कारण है- जीव और वातावरण के बीच अन्त:क्रिया। इसका एक निहितार्थ है कि जिस प्रकार बच्चा वातावरण के संपर्क में आता है और उसका विकास क्रमशः होता है उसी प्रकार उसकी भाषा का भी विकास होता जाता है। जैसे-जैसे बच्चा वातावरण के संपर्क में आता है अपना वातावरण से अन्त:क्रिया करता है, वैसे-वैसे उसकी मानसिक संरचनाओं में गुणात्मक बदलाव आता है। पियाजे के अनुसार सीखने के संदर्भ में आत्मसातीकरण और समायोजन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है। एक उदाहरण के माध्यम से इसे समझने का प्रयास करते हैं। एक बच्चा अपनी माँ के साथ बाजार जाता है। वहाँ वह एक गाय देखता है और उसकी माँ उस गाय की ओर संकेत कर कहती है- देखो गाय आ गई। बच्चा गाय की छवि को उसके नाम के (ध्वनि/आवाज) संयोजित कर लेता है। यानि बच्चे की बौद्धिक संरचना में 'गाय' की छवि और ध्वनि अपना स्थान ले लेती है। पियाजे के अनुसार यह छवि 'स्कीमा' कहलाती है। बच्चा अपनी बौद्धिक संरचना के आधार पर उसे आत्मसात करता है। अब बच्चा कुत्ता, बैल, बिल्ली आदि देखता है और उसे 'गाय' कहकर संबोधित करता है। यह सामान्यीकरण की प्रवृति है। बच्चे ने गाय और शेष जानवरों में संभवत: पैरों के आधार पर सामान्यीकरण किया। लेकिन जब अलग-अलग समय पर बच्चे के समक्ष उन जानवरों को अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है तो बच्चा पूर्व में बनाई गई छवि में परिवर्तन करता है। इस परिवर्तन के आधार पर वह गाय, कुत्ता, बैल, बिल्ली आदि जानवरों में भेद करना सीखता है और उसके साथ क्रमशः उनके नामों (ध्वनियों/शब्दों) को जोड़ता है। इतना ही नहीं वह धीरे-धीरे समय के बढ़ते क्रम में अलग-अलग तरह की गायों (सफेद, काली, भूरी, चितकबरी आदि) में भी अंतर करने लगता है और उसी के अनुरूप शब्दों का प्रयोग करता है। यह समायोजन की स्थिति है।

Next Class

P.T.O

Scanned with CamScanner